International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 27-01-2019; Accepted: 28-02-2019
www.alleducationjournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 83-86

सतना जिले में 'हेड स्टार्ट योजना' के क्रियान्वयन से प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

जर्नादन प्रसाद मिश्र[1], डॉ. जय सिंह[2]
[1] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत
[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र सतना जिले में 'हेड स्टार्ट योजना' के क्रियान्वयन से प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन पर आधारित है। अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि सतना जिले में 'हेड स्टार्ट योजना' के अन्तर्गत अध्ययनरत बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि के लिए दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 45.40 तथा 47.45 तथा मानक विचलन क्रमशः 20.20 तथा 18.69 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 1.05 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.59 से कम है। अतः 'हेड स्टार्ट योजना' के अन्तर्गत अध्ययनरत बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। शोध क्षेत्र के 100.00 प्रतिशत डी.पी.सी. 75.00 प्रतिशत डाइट ब्लाक प्रभारी, 62.50 प्रतिशत बी.ई.ओ., 87.50 प्रतिशत बी.आर.सी.सी., 75.00 प्रतिशत जनशिक्षक, 75.00 प्रतिशत शिक्षक एवं 70.00 प्रतिशत अभिभावक यह मानते है कि हेडस्टार्ट योजना के क्रियान्वयन से प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर मे सुधार हुआ है।

मूल शब्दः सतना जिला, प्रारंभिक विद्यालय, हेड स्टार्ट योजना, शैक्षिक उपलब्धि।

1. प्रस्तावना
''शिक्षा से अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है, जो बालकों मे उचित आदतों के निर्माण द्वारा सद्गुण की प्रथम प्रवृत्ति उत्पन्न करता है, जो जीवन के आरम्भ से अंत तक उस वस्तु के प्रति सदैव घृणा उत्पन्न करता है, जिससे आपको घृणा करनी चाहिए और उस वस्तु के प्रति प्रेम उत्पन्न करता है, जिससे आपको प्रेम करना चाहिए यही सच्ची शिक्षा है।''
भारतीय शिक्षा शास्त्रियों, दार्शनिकों तथा चिन्तकों के समान ही पाश्चात्य विद्वानों ने भी शिक्षा पर गंभीर चिन्तन किया है। अरस्तू के अनुसार ''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण ही शिक्षा है।'' टी0 रेमाण्ट ने शिक्षा को परिभाषित करते हुए लिखा है, कि ''शिक्षा उस विकास का नाम है, जो शैशव अवस्था से प्रौढ़ अवस्था तक होता ही रहता है, जिससे मानव को आवश्यकतानुसार भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है।'' जे0 एस0 मेकेंजी के अनुसार – ''व्यापक अर्थ में शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो आजीवन चलती रहती है और जीवन के प्रत्येक अनुभव से उसके भण्डार में वृद्धि होती है।'' काण्ट के अनुसार–''शिक्षा व्यक्ति की उस पूर्णता का विकास है जिसकी उसमें क्षमता है।'' जॉन डीवी के अनुसार–''शिक्षा भावी जीवन की तैयारी मात्र नहीं है, वरन जीवन यापन की प्रक्रिया है।'' हरबर्ट स्पेन्सर के अनुसार–''शिक्षा का अर्थ अन्तः शक्तियों का बाह्य जीवन से समन्वय स्थापित करना है।'' फ्रोबेल ने शिक्षा को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक अपनी आन्तरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करता है।''
आज की शैक्षणिक प्रक्रिया में नवीनतम तकनीक युक्त शिक्षा प्रणाली की संस्थाओं और सेवाओं, सूचना केन्द्रों, प्रशिक्षण प्रयोगशालाओं, श्रव्य–दृष्य प्रौद्योगिकी आदि के प्रयोग को महत्व दिया जा रहा है।
हेड स्टार्ट योजना एक विशेष शैक्षणिक कार्यक्रम है जो पूर्णतः कम्प्यूटर के माध्यम से संचालित है। इसमें कक्षा 1 से 8वीं तक के समस्त विषयों को पढ़ाने के लिए साफ्टवेयर उपकरणों की सहायता ली जाती है। यह कम्प्यूटर शिक्षा समर्थित योजना प्रदेश जिला, विकासखण्ड एवं जन शिक्षा केन्द्र स्तरों पर विस्तारित होकर बहुआयामी ज्ञान प्रदान करने का सशक्त माध्यम बनती जा रही है।

2. अध्ययन की आवश्यकता
हेडस्टार्ट योजना के तहत संगणकों का उपयोग, शिक्षा में गुणात्मक विकास हेतु किया जा रहा है जिसमें म.प्र. सरकार द्वारा किये गये व्यय का प्रतिफल एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मूल्यांकन करना आवश्यक है। यह योजना किस स्तर तक सफल रही है और इसके पूर्ण क्रियान्वयन में कौन–कौन सी बाधाएँ आ रही हैं, इसकी समीक्षा भी जरूरी है। प्रदाय सामग्री का समुचित उपयोग उस योजना हेतु किस स्तर तक हो रहा है, इन सब तथ्यों का अनुवीक्षण होना चाहिए, ताकि योजना अपने लक्ष्यगत उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल हो सके।
उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर शोधार्थी द्वारा शोध विषय की आवश्यकता निम्न बिन्दुओं द्वारा अधिक स्पष्ट होती है –

- योजना संबंधी प्राप्त संसाधनों का विद्यालयों में उचित उपयोग एवं रख रखाव है या नहीं, इसका अध्ययन करने हेतु।
- इस योजना का शिक्षक की विशेषज्ञता एवं शिक्षण–कौशल पर क्या प्रभाव पड़ रहा है, का अध्ययन करने हेतु।

3. उद्देश्य
प्रत्येक कार्य का लक्ष्यगत उद्देश्य होता है। उद्देश्य विहीन कार्य लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। किसी शोध समस्या के चयन के पूर्व ही उद्देश्यों का निर्धारण आवश्यक होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य हैः

- कम्प्यूटर समर्थित शिक्षा का प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर गणित विषय में परिलक्षित प्रभाव का अध्ययन करना।
- क्रियान्वित योजना के फलस्वरूप गणित विषय में विद्यार्थियों के गुणात्मक विकास में पड़े क्रमिक प्रभाव की तुलनात्मक जानकारी प्राप्त करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

''प्रयोग से प्राप्त परिणाम तथा परिकल्पना से निर्दृष्ट परिणाम मे कोई अंतर नही है।'' उक्त कथन से आशय यह है कि शोधार्थी शोध कार्य के पूर्व परिकल्पनाएँ निर्मित करता है, ये परिकल्पनाएँ ही सम्भावित निष्कर्ष होती है, इसे ही परिकल्पना से निर्दृष्ट परिणाम कहते है।

शोधार्थी द्वारा आँकड़ों के संकलन के पश्चात विश्लेषण द्वारा प्राप्त निष्कर्ष ही प्रयोग से प्राप्त परिणाम है।

इस प्रकार अनुसंधानकर्ता द्वारा शोध कार्य के पूर्व की गयी परिकल्पना अर्थात संभावित निष्कर्ष व शोध कार्य पश्चात प्राप्त निष्कर्ष मे जब कोई अंतर नहीं होता तब उसे शून्य परिकल्पना कहते है।

उक्त परिभाषा के अनुसार परिकल्पना सत्यापित होती है तो वह शून्य परिकल्पना कहलाती है।

शोधार्थी की मान्यता है कि इस अध्ययन के पश्चात् निम्नलिखित तथ्य प्राप्त होगे–

1. 'हेड स्टार्ट योजना' के अन्तर्गत अध्ययनरत बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. 'हेड स्टार्ट योजना' के क्रियान्वयन से प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक स्तर में सुधार हुआ है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

शोध कार्य का क्षेत्र जिला सतना है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना (सुहावल), चित्रकूट (मझगवाँ), रामपुर बघेलान, नागौद, ऊचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैहर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित प्रारंभिक शिक्षा स्तर (प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक), जनशिक्षा केन्द्र, ब्लाक शिक्षा केन्द्र, जिला शिक्षा केन्द्र द्वारा किये जाने वाले दक्षता सम्बन्धी कार्यक्रम इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित होगें।

समष्टि व प्रतिदर्श

चूंकि सतना जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी प्रारंभिक स्तर (प्राथमिक व माध्यमिक) विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए जिले के सभी विकासखण्डों से 10–10 विद्यालय कुल 80 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु किया जाएगा। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा जायेगा कि सभी विकासखण्डों के प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सके तथा ये सभी विद्यालय शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित हो।

शोध लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शासन द्वारा संचालित हेड स्टार्ट योजना के प्रभावों का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 10–10 छात्र–छात्राएं कुल 800 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया जायेगा। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साक्षात्कार विधिः** शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।
- **साख्यिकीय विधिः** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– डमंदए प्रतिशत ;ड्डए ैण्क्ए ष्जष ज्मेज आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित बच्चों के गुणवत्ता–स्तर हेतु परीक्षण पत्रक / कक्षा 6 वीं गणित का परीक्षण किया जायेगा।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह (2016)[1] श्रीवास्तव तथा डॉ. छाया एवं डॉ. जय सिंह (2016)[2], शर्मा, आर.ए. (1998)[3], सरीन, शशिकला एवं सरीन, अंजनी (1998)[4], यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी (2006)[5], म.प्र.रा.के. भोपाल (2008–09)[6], बेहार, शरद (1983)[7] एवं पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007)[8] ने शोध विधि एवं छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. सतना जिले का सामान्य परिचय

भारत के हृदय स्थल में बसा मध्यप्रदेश अपने आप में विभिन्न संस्कृतियों, पुरासम्पदाओं, प्राकृतिक सौंदर्यता, अनमोल धरोहरों, धार्मिक स्थलों, अनुपम कलाकृतियों से सुसज्जित है। सतना मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्वी सीमा के मध्य स्थित वर्तमान रीवा संभाग का एक महत्वपूर्ण व्यवसायिक एवं औद्योगिक प्रधान जिला है। जिले के उत्तर में उत्तर प्रदेश का बाँदा जिला पूर्व में रीवा एवं सीधी जिला, दक्षिण में शहडोल व जबलपुर जिला, तथा पश्चिम में पन्ना जिला स्थित है। जिला अपनी धार्मिक विरासतों, औद्योगिक संस्थानों, सांस्कृतिक ऐतिहासिक परिदृश्यों, प्रमुख वनोपज एवं खनिज के कारण सर्वोच्च शिखर पर है। जिला वीर, पराक्रमी, योद्धाओं, वीरांगनाओं, सेनानियों आदि से जाना पहचाना जाता है।

सतना जिला 23.58°–25.12° उत्तरी अक्षांश 80.12 – 81.23° पूर्वी देशान्तर पर स्थिति है। जिले समुद्र तल से ऊँचाई 317 मी. है, नागौद 626 मी., अमरपाटन और मैहर 537.06 मीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित

क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1: **"**हेड स्टार्ट योजना' के अन्तर्गत अध्ययनरत बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 1: हेड स्टार्ट योजना' के अन्तर्गत अध्ययनरत बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

समूह		**बालक**	**बालिका**
समूह की संख्या (N)		225	175
मध्यमान (M)		45.40	47.45
मानक विचलन (SD)		20.20	18.69
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		1.05	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	

उपर्युक्त सारणी में 'हेड स्टार्ट योजना' के अन्तर्गत अध्ययनरत बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि के लिए दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 45.40 तथा 47.45 तथा मानक विचलन क्रमशः 20.20 तथा 18.69 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 1.05 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.59 से कम है। अतः : हेड स्टार्ट योजना' के अन्तर्गत अध्ययनरत बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना "हेड स्टार्ट योजना" के अन्तर्गत अध्ययनरत बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।" स्वीकार की जाती है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्र. 2 : "हेड स्टार्ट योजना' के क्रियान्वयन से प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक स्तर में सुधार हुआ है।"

सारणी 2: 'हेडस्टार्ट योजना' के क्रियान्वयन से प्रारम्भिक षिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर से सुधार हुआ है के सम्बन्ध मे अध्ययन

क्र.	**जानकारी संकलन के स्त्रोत**	**न्यादर्ष मे चयनित संख्या**	**हेडस्टार्ट योजना के क्रियान्वयन से प्रारंभिक षिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर मे सुधार हुआ है, के सम्बन्ध मे मत**			
			हाँ		**न्हीं**	
			संख्या	**प्रतिषत**	**संख्या**	**प्रतिषत**
1	डी.पी.सी.	01	01	100.00	.	.
2	डाइट ब्लाक प्रभारी	08	06	75.00	02	25.00
3	बी.ई.ओ.	08	05	62.50	03	37.50
4	बी.आर.सी.सी.	08	07	87.50	01	12.50
5	जनशिक्षक	80	60	75.00	20	25.00
6	शिक्षक	160	120	75.00	40	25.00
7	अभिभावक	160	112	70.00	48	30.00

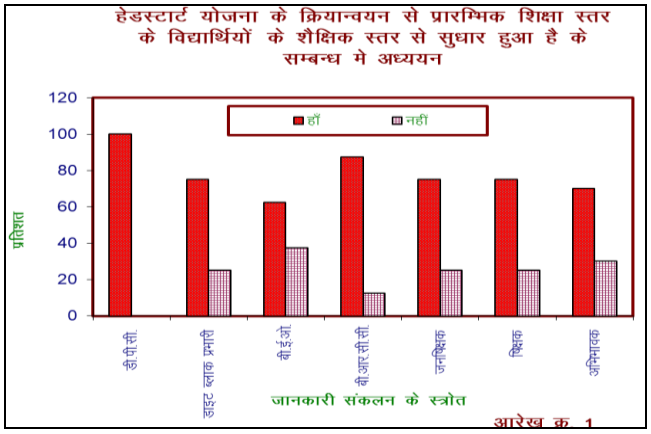

सारणी क्रमांक 2 मे शोध क्षेत्र के डी.पी.सी. डाइट ब्लाक प्रभारी, बी.ई.ओ.

, बी.आर.सी.सी. जनशिक्षक, शिक्षक एवं अभिभावकों से हेडस्टार्ट योजना के क्रियान्वयन से प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर मे सुधार हुआ है के सम्बन्ध मे तथ्य संकलित किये गये है, संकलित तथ्य प्राथमिक स्त्रोत से सम्बन्धित है, तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 100.00 प्रतिशत डी.पी.सी. 75.00 प्रतिशत डाइट ब्लाक प्रभारी, 62.50 प्रतिशत बी.ई.ओ., 87.50 प्रतिशत बी.आर.सी.सी., 75.00 प्रतिशत जनशिक्षक, 75.00 प्रतिशत शिक्षक एवं 70.00 प्रतिशत अभिभावक यह मानते है कि हेडस्टार्ट योजना के क्रियान्वयन से प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर मे सुधार हुआ है। जबकि 25.00 प्रतिशत डाइट प्रभारी, 37.50 प्रतिशत बी.ई.ओ., 12.50 प्रतिशत बी.आर.सी.सी., 25.00 प्रतिशत जनशिक्षक, 25.00 प्रतिशत शिक्षक, एवं 30.00 प्रतिशत अभिभावक यह मानते है कि हेडस्टार्ट योजना के क्रियान्वयन से प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर मे सुधार नही हुआ है।

सारणी क्रमांक 2 में संकलित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश डी.पी.सी., डाइट ब्लाक प्रभारी, बी.ई.ओ., बी.आर.सी.सी., जनशिक्षक, शिक्षक एवं अभिभावक यह मानते है कि हेडस्टार्ट योजना के क्रियान्वयन से प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर मे सुधार हुआ है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

'हेड स्टार्ट योजना' के अन्तर्गत अध्ययनरत बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि के लिए दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 45. 40 तथा 47.45 तथा मानक विचलन क्रमशः 20.20 तथा 18.69 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (ब्R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 1.05 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.59 से कम है। अतः : हेड स्टार्ट योजना' के अन्तर्गत अध्ययनरत बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना "हेड स्टार्ट योजना' के अन्तर्गत अध्ययनरत बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

शोध क्षेत्र के 100.00 प्रतिशत डी.पी.सी. 75.00 प्रतिशत डाइट ब्लाक प्रभारी, 62.50 प्रतिशत बी.ई.ओ., 87.50 प्रतिशत बी.आर.सी. सी., 75.00 प्रतिशत जनशिक्षक, 75.00 प्रतिशत शिक्षक एवं 70.00 प्रतिशत अभिभावक यह मानते है कि हेडस्टार्ट योजना के क्रियान्वयन से प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर मे सुधार हुआ है।

सन्दर्भ

1- त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह (2016) "रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2016; 1(9):05-07.

2- श्रीवास्तव, डॉ. छाया एवं डॉ. जय सिंह (2016) – "माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता का अध्ययन (सतना जिले के संन्दर्भ में)Þ International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2016; 1(3):63-65.

3. शर्मा, आर.ए. (1998) : शिक्षा अनुसंधान, आर. लाल बुक डिपो मेरठ.

4. सरीन, शशिकला एवं सरीन, अंजनी (1998), शैक्षिक अनुसंधान, आगराः विनोद पुस्तक मंदिर।

5. यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी (2006) – वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के समाधान में प्राचीन भारतीय शैक्षिक परम्पराओं की प्रासंगिकता। भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी. ई.आर.टी., वर्ष–24, अंक–3 पृष्ठ–75–84।

6. म.प्र.रा.के. भोपाल (2008–09)–दक्षता संवर्धन कार्यक्रम गतिविधि मार्गदर्शिका (हिन्दी एवं गणित), म.प्र.रा.शि.केन्द्र बी. –विंग पुस्तक भवन, अरेरा हिल्स, भोपाल।

7. बेहार, शरद (1983)– मध्यप्रदेश का शैक्षिक इतिहास पृ. 46. (पलास, शिक्षा विशेषांक)

8. पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007) भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार : दशा और दिशा, 'कुरूक्षेत्र, मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, वर्ष 53, अंक–11 पृष्ठ–7–9।